IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम बनाम गुणवत्ता युक्त शिक्षण

डॉ. अर्पणा शर्मा (प्राचार्य)

M.Sc., M.Ed.,

Ph.D (Education)

पताः प्राचार्य, सरदार ज्ञानसिंह मेमोरियल कॉलेज, बड़ागाँव रोड, ग्वालियर (म.प्र.) पिनकोडः 474006

1. शोध सार

अध्यापकों की कार्यकुशलता एवं शिक्षण में गुणवत्ता लाने हेतु शिक्षक प्रशिक्षण की बहुत आवश्यकता है। शिक्षा के उद्देश्यों का समयानुसार परिवर्तन, पाठ्यक्रम का तदानुसार संशोधन, नवीन मूल्यांकन विधियों की जानकारी तथा नवीन प्रकार से विद्यालय व्यवस्था को अपनाने की दृष्टि से शिक्षक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षक तब तक सच्ची शिक्षा नहीं दे सकता जब तक कि स्वयं वह न सीख रहा हो। एक दीपक दूसरे को तब तक नहीं जला सकता जब तक कि वह खुद न जल रहा हो। नवीन ज्ञान से अवगत शिक्षक ही विद्यार्थियों को समुचित शिक्षा देने में समर्थ होते है, और ये ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का संतुलित विकास कर सकते है।

शिक्षा के स्तर को सुधारने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षण देना अत्यन्त आवश्यक है। शिक्षा के क्षेत्र में समय–समय पर किए गए अनुसंधानों ने यह तथ्य उजागर किया है कि शिक्षा स्तर और शिक्षकों को दिये गये व्यावसायिक प्रशिक्षण में गहरा संबंध है। शिक्षा की उन्नति के लिए कुशल शिक्षकों द्वारा ही संभव है।

किसी भी क्षेत्र में किया जाने वाला अनुसंधान कार्य उस क्षेत्र से संबंधित कुछ निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किया जाता है। मेरा यह शोध कार्य शिक्षा की उन्नति की दिशा में एक कदम है।

2. प्रस्तावना

प्राचीन शिक्षा पद्धति से लेकर वर्तमान तक दृष्टि डालने पर यह आवश्यकता प्रतीत होती है कि शिक्षक के व्यक्तित्व में अपेक्षित गुणों, दक्षताओं, योग्यताओं एवं अद्यतन ज्ञान का समावेश होना चाहिये। शिक्षक को विषय वस्तु एवं शिक्षण विधि का प्रयोग इस तरह से करना चाहिये ताकि विद्यार्थी के अधिगम में वृद्धि हो सके। नवीन अनुभव व्यक्ति के व्यवहार में वृद्धि तथा संशोधन करते है, ये अनुभव तथा इनका उपयोग ही अधिगम कहलाता है।

ज्ञान विस्तार के साथ ज्ञान प्राप्ति के साधनों और शिक्षण व अधिगम में विकास हो रहा है। नवीन युक्तियों, तकनीकियों जनसंचार विधियों, कम्प्यूटर आधारित अधिगम तथा सूचना व सम्प्रेषण तकनीक ने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में क्रांति ला दी है। द्रुत गति से अधिगम करने वाले समाज में यदि अध्यापक इन क्षेत्रों में हो रहे विकास तथा इनके प्रयोग की योग्यता के प्रति जागरूक नहीं हुए तो ये अपने कार्य निर्वहन में समर्थ नहीं हो सकेंगे। परिस्थितियों की मांग के अनुरूप शिक्षक को प्रशिक्षण देकर तैयार करना होगा तभी शिक्षक शिक्षण द्वारा छात्रों का सर्वांगीण विकास कर सकेगा।

3. शोध की आवश्यकता

वर्तमान समय में ज्ञान के विस्फोट के कारण प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। जिससे शिक्षण व प्रशिक्षण दोनों ही अछूते नहीं रहे है। अध्यापन और प्रशिक्षण के तौर तरीके में भी बहुत बदलाव आया है। अध्यापन प्रक्रिया एक कला है और अध्यापक कलाकार, जैसे कला के निरन्तर अभ्यास और प्रशिक्षण से कलाकार की शैली में निखार आता है। इसी प्रकार शिक्षक के निरन्तर शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने से उसके अध्यापन कौशलों में निखार आता है। प्रशिक्षण के द्वारा नवीन पाठ्यांशों की जानकारी प्राप्त होना, नई विधियों एवं तकनीक से परिचित होना, शिक्षण को प्रभावी एवं रोचक बनाना आदि शिक्षक के ज्ञान को तरोताजा कर नई स्फूर्ति एवं प्रोत्साहन का संचार करते है।

प्रशिक्षण द्वारा शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों का अधिगम जितना तीव्र होगा उतना ही वह विद्यार्थी को सिखा सकेगा। शिक्षक को सीखने हेतु मानसिक रूप से तैयार होना चाहिए। शोधार्थी का उद्देश्य शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में शिक्षक की अधिगम प्रक्रिया में आने वाले परिवर्तनों का पता लगाना है।

4. समस्या कथन

''प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षणों में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का अधिगम प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' (जिला–शिवपुरी के संदर्भ में)

5. शोधकार्य के उद्देश्य

1. प्राथमिक स्तर पर सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का अधिगम प्रक्रिया पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों के सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का ग्रामीण एवं शहरी शिक्षकों पर अधिगम प्रक्रिया का तुलनात्मक का अध्ययन।
3. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण दौरान कठिन अवधारणाओं का निराकरण का अध्ययन।
4. शिक्षकों को छात्र–छात्राओं की गुणवत्ता युक्त शिक्षा के लिए प्रेरित करना।
5. विचारों एवं अनुभवों का आदान–प्रदान करना।

6. शोध विधि

समस्या के अध्ययन के लिए शोधार्थी ने सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया है।

7. समस्या का परिसीमन

शोध कार्य जिला शिवपुरी के प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तक सीमित है।

8. न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में शिवपुरी जिले के प्राथमिक स्तर के 100 शहरी व 100 ग्रामीण शिक्षकों का चयन किया गया। 100 शहरी शिक्षकों में 50 शिक्षक व 50 शिक्षिकाओं तथा 100 ग्रामीण शिक्षकों में 50 शिक्षक व 50 शिक्षिकाओं का चयन किया गया।

9. परिकल्पनायें

1. प्राथमिक स्तर पर सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षण का शहरी शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षण का ग्रामीण शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

10. प्रदत्तों का विश्लेषण

प्रदत्तों का सारणीयन एवं वर्गीकरण किया गया है। इसके पश्चात उनकी तुलना करने के लिए उनका विश्लेषण, मध्यमान, प्रमाणित विचलन, मानक त्रुटि ($S.E_d$.) कांतिक अनुपात (C.R.), काई वर्ग एवं प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों के द्वारा किया गया है।

तालिका 1

शा.प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के पूर्व व पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों का Mean, S.D., S.Ed तथा C.R. का विवरण

	N.	Mean	S.D.	S.Ed	C.R.
पूर्व परीक्षण	200	30.07	5.3	.47	24.36
पश्च परीक्षण	200	41.52	4.1		

fd = $N_1 - 1 + N_2 - 1 = 200 - 1 + 200 - 1 = 398$

ग्राफ क्र.1

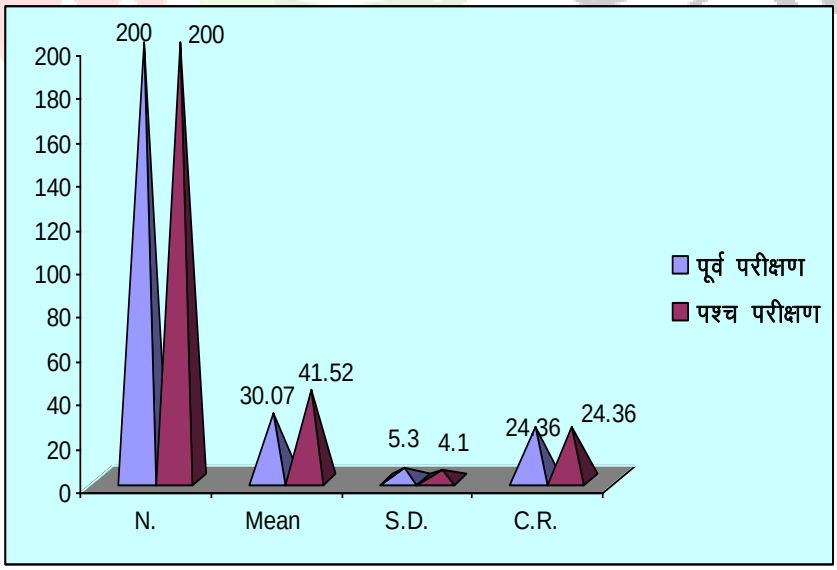

विवेचना एवं व्याख्या – उपरोक्त तालिका एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि d.f. 398 पर गणना द्वारा C.R का मान 24.36 है। जो .05 (5%) विश्वास स्तर पर C.R. का मान 1.97 तथा 0.01 (1%) विश्वास स्तर के मान 2.59 से अधिक है। अतः मध्यमानों का अंतर अधिक सार्थक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सेवाकालीन प्रशिक्षण में पूर्व व पश्च परीक्षण का शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

तालिका 2

शा.प्राथ. विद्यालय के शहरी शिक्षकों की पूर्व व पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों का Mean, S.D., S.Ed तथा C.R. का विवरण

क्रमांक		N	मध्यमान	मानक विचलन S.D.	S.Ed	C.R.
1	पूर्व परीक्षण	100	28.6	4.8	0.64	19.60
2	पश्च परीक्षण	100	41.15	4.30		

fd = N_1–1 + N_2–1 = 100–1+100–1 = 198

ग्राफ 2

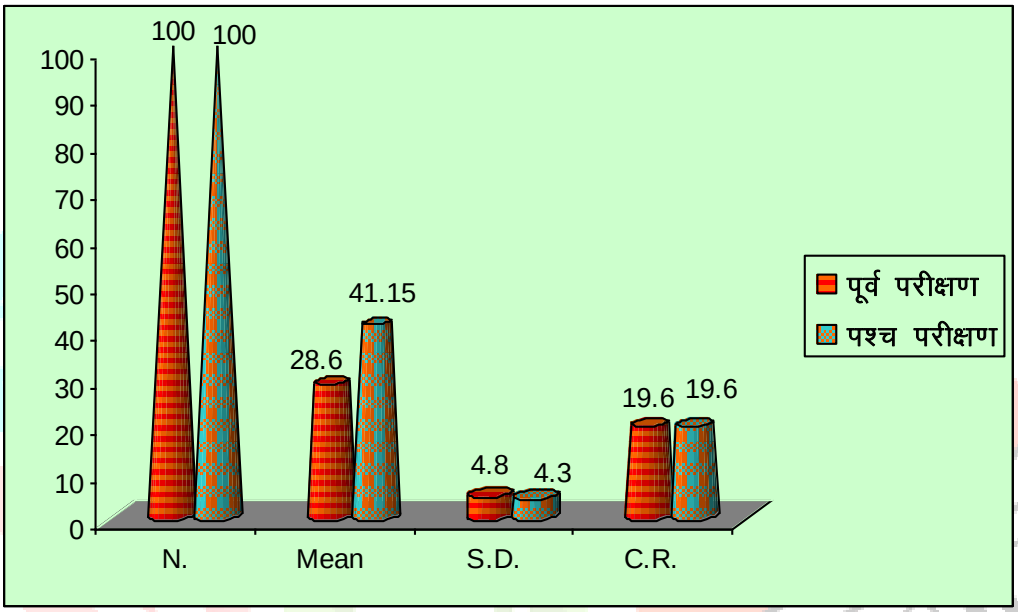

विवेचना एवं व्याख्या – उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि d.f. 198 पर गणना द्वारा C.R का मान 19.60 है। जो 0.05 (5%) विश्वास स्तर पर C.R. का मान 1.97 तथा 0.01 (1%) विश्वास स्तर के मान 2.60 से अधिक है। अतः मध्यमानों का अंतर अधिक सार्थक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व व पश्च परीक्षण का शहरी महिला व पुरूष शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है।

तालिका 3

शा.प्रा.विद्यालय के ग्रामीण शिक्षकों के पूर्व व पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों Mean, S.D. , S.Ed तथा C.R. का विवरण

क्रमांक		N	मध्यमान	मानक विचलन S.D.	S.Ed	C.R.
1	पूर्व परीक्षण	100	31.55	5.35	0.65	15.92
2	पश्च परीक्षण	100	41.9	3.90		

fd = N_1–1 + N_2–1 = 100–1+100–1 = 198

ग्राफ क्र.3

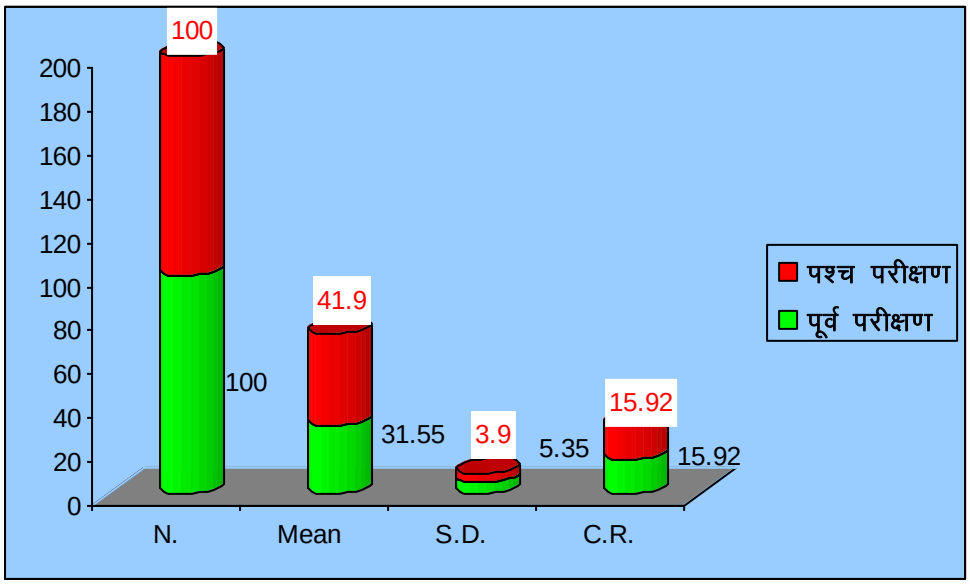

विवेचना एवं व्याख्या – उपरोक्त सारणी एवं ग्राफ से स्पष्ट है कि d.f. 198 पर गणना द्वारा C.R का मान 15.92 है। जो 0.05 (5%) विश्वास स्तर पर C.R. का मान 1.97 तथा 0.01 (1%) विश्वास स्तर के मान 2.60 से अधिक है। अतः मध्यमानों का अंतर अधिक सार्थक है।

अतः यह कहा जा सकता है कि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व व पश्च परीक्षण का ग्रामीण महिला व पुरूष शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ता है।

11. निष्कर्ष

परिकल्पना 1

"प्राथमिक स्तर पर सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।"

तालिका 1 में सेवाकालीन शिक्षक परीक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव के अध्ययन के पश्चात् Degree of freedom (df) 398 पर गणना द्वारा C.R. का मान 24.36 प्राप्त हुआ है जो कि 't' सारणी से प्राप्त 0.05 (5%) विश्वास स्तर पर 1.97 तथा 0.01 (1%) विश्वास स्तर पर 2.59 से अधिक है। अतः दोनों सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः तालिका 1 एवं ग्राफ 1 में मध्यमानों के आधार पर हम कह सकते हैं कि सेवाकालीन प्रशिक्षण पश्चात् शिक्षकों में अधिगम प्रक्रिया बढ़ जाती है।

अतः स्पष्ट है कि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व व पश्च परीक्षण से शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इस कारण हम कह सकते हैं कि प्रशिक्षण में परीक्षण होना आवश्यक है।

परिकल्पना 2

"सेवाकालीन शिक्षक परीक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षण का शहरी शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है"

तालिका 2 एवं ग्राफ 2 में शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का शहरी शिक्षकों पर अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव के अध्ययन के पश्चात् d.f. 198 पर गणना द्वारा C.R. का मान 19.60 प्राप्त हुआ है जो कि 't' सारणी से प्राप्त 0.05 (5%)

विश्वास स्तर पर C.R. का मान 1.97 तथा 0.01 (1%) विश्वास स्तर पर 2.60 से अधिक है। दोनों सार्थकता स्तर पर हमारी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका 2 एवं ग्राफ 2 के मध्यानों के आधार पर हम कह सकते हैं कि सेवाकालीन प्रशिक्षण पश्चात् शहरी शिक्षकों (पुरूष, महिला) में अधिगम प्रक्रिया बढ़ जाती है।

अतः स्पष्ट है कि सेवाकालन शिक्षक प्रशिक्षण से पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का शहरी शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना 3

''सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षण का ग्रामीण शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।''

तालिका 3 एवं ग्राफ 3 में सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का ग्रामीण शिक्षकों (पुरूष, महिला) पर अधिगम प्रक्रिया के प्रभाव के अध्ययन पश्चात् d.f. 198 पर गणना द्वारा C.R. का मान 15.92 प्राप्त हुआ है जो कि 't' सारणी से प्राप्त 0.05 (5%) विश्वास स्तर पर C.R. का मान 1.97 तथा 0.01 (1%) विश्वास स्तर पर 2.60 से अधिक है। अतः दोनों सार्थकता स्तर पर हमारी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

तालिका 3 एवं ग्राफ 3 में मध्यमानों के आधार पर हम कह सकते हैं कि सेवाकालीन प्रशिक्षण पश्चात् ग्रामीण शिक्षकों में अधिगम प्रक्रिया बढ़ जाती है।

अतः स्पष्ट है कि सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का ग्रामीण शिक्षकों की अधिगम प्रक्रिया पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

12. सुझाव

1. प्रशिक्षण दौरान सिखाई गई गतिविधि आधारित नवीन विधियों का उपयोग अपने शिक्षण में करना चाहिए।
2. अध्यापन से पूर्व विषय वस्तु को पढ़कर जाना चाहिए।
3. शिक्षक को स्वनिर्मित सहायक सामग्री का निर्माण विद्यार्थियों की सहभागिता के साथ करना चाहिए।
4. शिक्षकों को दिये जाने वाले सेवाकालीन प्रशिक्षण का सतत् मूल्यांकन प्रशासन द्वारा किया जाना चाहिए।
5. प्राथमिक स्तर पर योग्य लगनशील तथा अच्छे परिणाम देने वाले शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को पुरूस्कृत करना चाहिए।
6. प्रशिक्षकों का चयन पारदर्शिता एवं व्यक्तित्व को देखकर किया जावे।

संदर्भ ग्रंथ

1. Allport, G.W., quated by Jahoda & cook, Research methods in social Relations p. 236
2. Best John W, Research in education, prentice Hall inc., Englewood Cliffs, N.j.1959
3. Garrette H.E. – Statisticsin psychology and education Paragon Enternational Publication.
4. Good; w.j. & Hatt P.K.–Method in Social Research, Newyork
5. Kapil, H.K.–Elements of Statistics Vinod Pustak Mandir, Agra
6. Mouly, G.C. – The science of educational Research 1963 P-231
7. NCTE जनरल 2004–अध्यापक शिक्षा के कतिपय विशिष्ट मुद्दे एवं संदर्भ
8. पाठक पी.डी.–शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
9. सरीन डॉ. शशिकला एवं सरीन डॉ. अंजली, ''शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ'' श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2009, पृष्ठ 85
10. राय पारसनाथ – अनुसंधान एक परिचय लक्ष्मी नारायण अग्रवाल आगरा
11. रा. शिक्षा केन्द्र भोपाल–शिक्षक प्रशिक्षण माड्यूल 2009
12. शर्मा, बी.एन. – शिक्षा मनोविज्ञान साहित्य प्रकाशन, आगरा
13. श्रीवास्तव का डी.एन.–अनुसंधान विधियां साहित्य प्रकाशन आगरा
14. श्रीवास्तव का डी.एन., वर्मा प्रीति–मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्कीय अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
15. शर्मा, आर.ए.–शिक्षा अनुसंधान आर. लाल बुक डिपो मेरठ।
16. डॉ. सिंह रामपाल, वर्मा ओ.पी.–शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
17. Whitney, F2 – The elements of Research 1963, p-192
18. Young, P.V. – Scientific social surveys & Research prentice 1949